श्रीकृष्ण तांडव स्तोत्रम्

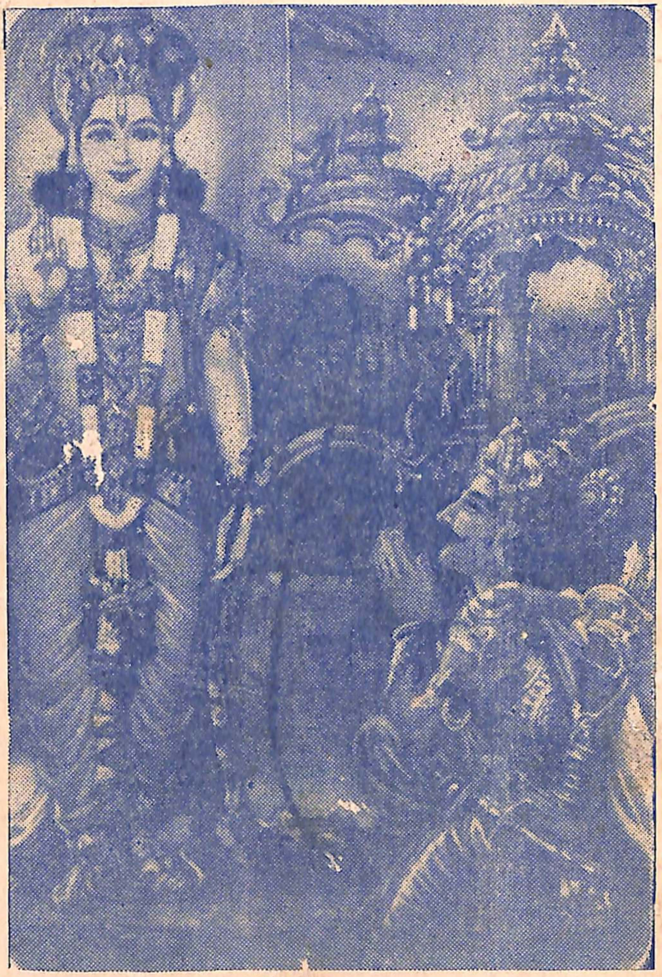

प्रणेता

नरोत्तम दत्त शास्त्री

S
294.185 1
Sh 24 M

सम्मति

(१) भव्य-प्रतिमा-विभूषितैः, पंडितवर श्री नरोत्तम दत्त शास्त्रिभिः प्रणीत "कृष्ण तांडव स्त्रोत" मालोक्य सुतरां प्रसादः समुदैत्। वैचित्र्येण खलु चित्रित मत्रभवतः श्रीकृष्णस्य स्तुतिरूपं चरित्र मिति तत्पठनादेवोपल प्स्यते। शिव तांडव वेदमपि श्रीकृष्ण भक्त चित्तेषु कामप्यानिवचनीयाँ रसानन्द-सन्दोह-सरणिं सारयत् प्रथित-प्रचारं स्यादिति प्रेप्सुः सम्मनुते,

विजयदशमी
सं० १९८९

तुलसीराम शास्त्री, भंडूता
बिलासपुर (हि० प्र०)

¤ ¤ ¤

२ आत्मोपम मित्र श्री नरोत्तम दत्त शास्त्री द्वारा रचित "कृष्ण तांडव स्तोत्र" पढ़ा, हृदय गद्गद् हो गया। सुरभारती संस्कृत के सुरीले एवं सारगर्भित पद्यों के लयताल पर मन झूम उठा। शास्त्री जी का प्रयास सर्वथा सराहनीय है। अच्छा होता शास्त्री जी प्रस्तुत स्तोत्र का सरल संस्कृत तथा हिन्दी में भी अनुवाद कर देते ताकि मेरे जैसे संस्कृत का अल्प ज्ञान रखने वाले लोगों के लिए यह सुवोध हो जाता, जो भी हो, मैंने आज से ही "शिव तांडव स्तोत्र के साथ-साथ इसका भी प्रतिदिन प्रातः पाठ करने का संकल्प कर लिया है।

शर्म्मा निवास
सं १९८९ विक्रमी.

ब्रज लाल शर्म्मा "निरंकुश"
बिलासपुर राज्य

नरोत्तम दत्त शास्त्री

श्रीकृष्ण तांडव स्तोत्रम्

प्रथम संस्करण
सं० १९९८ विक्रमी

द्वितीय संस्करण
सं० २०४६ विक्रमी

© नरोत्तम दत्त शास्त्री

लेखक व प्रकाशक
नरोत्तम दत्त शास्त्री
जीवन कुटीर बिलासपुर

मूल्य १० रु०

टीकाकार
श्री तुलसी रमण शास्त्री मण्डी

मुद्रक : यूनिवर्सल प्रिंटर्स
१४६-बी, मेन मार्किट बिलासपुर (हि० प्र०)

CATALOGUED

दो शब्द

प्यारे कृष्ण !

कोई भक्त आपकी सेवा तन से करता है, कोई धन से, सो मेरा मन तो पारिवारिक जीवन बिताते हुए पेट की अपार उलझनों में फंस कर आपकी सेवा से परांमुख है धन भी इन्हीं झंझटों में खर्च हो कर आपकी सेवा के लिए मेरे पास नहीं है, चंचल मन को हर समय बेकाबू पाता हूं, आपकी बांसुरी के मीठे बोल सुनने के लिए मेरे पास एक ही साधन है, वह है लेखनी, तिस पर भी मैं न विद्वान् हूं, न लेखक हूं, ना ही कबि होने का दावा कर सकता सकता हूं, जो कुछ इन टूटे फूटे पदों से आपकी सेवा मेरे से बन पड़ी है इसी पर मुझे आपकी "पुत्रं पुष्पं फलं तोयं" वाली प्रतिज्ञा के सहारे प्रसन्नता एवं "निज कवित केहि लाग न नीका" तुलसी दास जी की उक्ति के अनुसार पूर्ण संतोष है, आशा है मेरे इस प्रयास से आप अवश्य रीझेंगे और मेरे पक्षपाती बन कर न वैयाकरण पाणिनि, न छन्दो ज्ञाता पिंगल और नाहीं अलंकार शास्त्र धुरीण विश्वनाथ की शिकायतों को सुनने का अवसर देंगे, मुझे पूरा विश्वास है कि श्रीकृष्ण प्रेमी जन इस से अवश्य लाभ उठाएंगे ।

विनीत
नरोत्तम दत्त "शुक्ल"

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
सं० १९९८ विक्रमी
अमृतसर (१९४० ई०)

भगवत्प्रेमी बन्धुओ !

मैं अपने प्रात: स्मरणीय अर्च्यचरण पिता पं० धीरो राम वैद्य का ऋणी हूं जिन्हों ने बचपन में ही मुझे संस्कृत व्याकरण "सारस्वत" पढ़ाना आरम्भ कर दिया था और १३ वर्ष की आयु में मुझे संस्कृत शिक्षा के लिये अमृतसर भेज दिया था। वहीं मुझे दो तीन लोगों को गीता पढ़ाने का अवसर मिला। बार बार दोहराई से वह मुझे कंठस्थ हो गई। (स्वयं भी अध्ययन की रुचि जागने के कारण मैंने संस्कृत और हिन्दी में उस पर कई भाष्य और टीकायें पढ़ीं।) तब से ही गीता जीवनभर मेरी मार्गदर्शिका बनी रही। उसके निरन्तर अध्ययन, चिन्तन और मनन ने ही मुझे जीवन में ऊंचा उठना सिखाया। उसके सर्वांगीण ज्ञान से मैं इतना प्रभावित हुआ कि उसे अपना जीवनसाथी और उसके उपदेष्टा भगवान कृष्ण को अपना आराध्य देवता मान लिया था।

अमृतसर में हिन्दू सभा संस्कृत महाविद्यालय के प्रिंसिपल परमपूजनीय पं० मिहिरचन्द्र शास्त्री "पुष्करणा" के सान्निध्य से संस्कृत साहित्य के प्रति मुझ में रुचि पैदा हुई थी और संस्कृत व्याकरण के पंजाब में मूर्धन्य विद्वान पं० देवी दत्त शास्त्री जी के स्नेह और प्रेरणा से संस्कृत व्याकरण को संस्कारदृष्टि से पढ़ा था। यह गीता माता की कनुकम्पा ही थी कि तब पंजाब विश्व बिद्यालय से शास्त्री और हिन्दी प्रभाकर की परिक्षायें पास करने के बाद मेरी इच्छा "शिव तांडव स्तोत्र" की तरह ही एक "कृष्ण तांडव स्तोत्र" लिखने की हुई। उसे रचा और अमृतसर में ही प्रकाशित भी करवा लिया। उस पर संस्कृत और हिन्दी में टीका लिखने का इरादा अब ५० बरस के बाद पूरा हुआ है। अपने सहपाठी सुहृद् श्री तुलसी रमण शास्त्री जी ने मेरे अनुरोध को मान कर यह काम भी कर दिया। स्तोत्र का मूलरूप, भूमिका, सम्मति आदि को यथावत् रखा गया है। आशा है श्रीकृष्ण प्रेमी जन इसे चाव से पढ़ेंगे।

विनीत
नरोत्तम दत्त शास्त्री

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी
सं० २०४६ वि० १९८९ ई०

स्वर्गीय पं० धीरो राम शर्मा वैद्य

समर्पण

प्रात: स्मरणीय पिता पं० श्री धीरो राम शर्मा वैद्य
निवासी गांव सुन्हूणी, परगणा सुन्हाणी त० घुमारवीं,
जिला बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश), जिन के
स्नेह और आशीर्वाद के कारण हीं में
अपने जीवन को शिक्षा, राजनीति
और साहित्य के क्षेत्र में कुछ
उन्नत कर पाया, उन्हीं
के पुनीत चरण
कमलों में मेरी
यह अकिंचिन
भेन्ट सादर
समर्पित
है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी
बिलासपुर (हि० प्र०)

आत्मज
नरोत्तम दत्त शास्त्री

वंशी विभूषित करा न्नव-नी रदाभात्,
पीताम्बरादरुण-बिम्ब-फलाधरोष्ठात् ।
बालेन्दु - न्दरमुखादरविन्द्र नेत्रात्,
कृष्णात्परं किमपि तत्वमहं न जाने ।

Library IIAS, Shimla
S 294.184 1 Sh 24 S
G 1303
S
294.1841
Sh 24 S

निस्सीमशान्ति - शुभिभिन्त - सुमव्यभाग्
दामोदर - स्मरण "मानस" वास प्रेप्सु: ।
कर्त्तु "नरोत्तम" "मराल" इह प्रवृत्त:
श्रीकृष्ण तांडव मिदं त्वनुकर्ममात्रम् ।

Indian Institute of Advanced Study
Acc. No. G-1303
Date 4.5.92

१

अहं महोग्र कल्मषांकुशेन शीर्यमाण देहवान्,
इतस्त्व मेनसां समूह मार्जनेह देहवान् :
चरीकरोतु सार्थकं स्वनाम कृष्ण दुःखहम्,
समीक्ष्य सर्वसाक्षिणं मयीव मूकता यतः ॥

अहं (नरोत्तम दत्तः) **महोग्राणां**, महाभयंकराणां; कल्याषाणां, पापानं **अंकुशेन**, कीलकेन; **शीर्यमाणः**, दीर्यमाणः; देहः, शरीरम् यस्य एवं-भूतोऽहम्; इतः, अत्र त्वं श्रीकृष्णः एनसां; पापानां, यः समूहः बाहुल्य ताय **मार्जने**, हरणे या ईहा, चेष्टा तदवान् देह, शरीरं पांच एवं भूतः हे कृष्ण १. त्वं **स्वनाम**, स्वीयं नाम, **दुःखहं**, शोकनाशकं, एतादृशं **सार्थकं**, यथार्थ, **चरीकरोतु**, स्वनाम सार्थकीकरणेन मामनुगृहणातु यतः, यस्मात् कारणात्, सर्वसाक्षिणं, सर्वद्रष्टारं सर्वज्ञंत्वां समीक्ष्य, सम्यग् विचार्य मयि, तवभक्ते, मूकता इव, मौनमिव, त्वं स्वयमेव सर्वज्ञः अतो नाहं किमहि वक्तुकामः, मत्पापानि त्वं स्वयमेव हरिष्य यतीति भावः.

हे कृष्ण १ क्योंकि मेरा सारा शरीर संसार में रहते हुए घोर पापों के प्रहारों से छलनी हो गया है, इधर आप पापों से छुटकारा दिलाने वाले हो, अर्थात् अपने भक्तों के पापों को हरने में सदा तत्पर रहते हो, और फिर आप का नाम ही कृष्ण दुःखनाशक है। इसलिए मैं चुप्पी साधे बैठा हूं, आप से कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं समझता मेरे पापों को आप स्वयं ही हर लेंगे, ऐसी आशा लिये हूं।

१

सुसाम-सार-संविदां प्रचडं-दंड - कोविदाम्

अमेद्य-भेद-भेदिनां च दाम-कर्म मर्मिणाम ।

हिमांशु शील शालिनां प्रशंस्य शौर्य शोभिनां,

तमग्र्य मुग्रतापहं नमामि कृष्ण मस्पृहम् ॥

हे कृष्ण १ त्वं **सुसाम-सार-संविदां**, **सु** सम्ययक् प्रयुक्तः, **साम** शांतिः, सन्धिभावेन कार्यसाधनं तस्य यः **सारः** रहस्यं, तस्य संविदां सम्यग् ज्ञातृणां, **प्रचंड दंड कोविदाँ प्रचंडः** तीक्ष्णः, यः **दंडः** निग्रहः, तस्मिन् **कोविदां** मर्मज्ञानां, **अभेद्य-भेद भेदिनां अभेद्य** अच्छेद्यः यः **भेदः** भेदनीतिः तस्य **भेदिनां** उच्छेदकानां, **दाम कर्म मर्मिणां** एवं **दाम कर्मणि** अर्थप्रलोभने, **मर्मिणां** रहस्य पंडितानां, अथ च **हिमांशु शील शालिनां**, **हिमांशुः** चन्द्रः तद्वत् शीतलं **शीलं** आचरणं, तेन युक्तानां, **प्रशंस्य शौर्य शोभिनां प्रशंस्यं** श्लाध्यं, यत **शौर्यं** विक्रमः, तेन **शोभिनां** अलंकृतानां, जनानां, **अग्र्यं** प्रमुखं, **उग्रतापहं** दुस्सहदुःखनाशकं, **अस्पृहं** अनासक्तं कृष्णं वासुदेवं, नमामि ।

हे कृष्ण १ आप शान्ति (सुलह) से काम लेने वालों में, धन के प्रलोभन द्वारा काम निकालने वालों में, शत्रुओं में फूट डलवा कर सफल होने वालों में, युद्ध द्वारा भी विजय पाने वालों में और प्रशंसनीय पराक्रम से विभूषित वीरों में अग्रणी हो । आप ही घोर पापों से उत्पन्न ताप को हरने वाले हो, आप ही सब कुछ करते हुए भी उस में लिप्त नहीं होते, ऐसे आप को मेरा नमस्कार हो ।

३

बलावलेप वारुणी विमूढ मूढ मंडली
विडम्बना विदार पूर्वकं शिवाध्व दर्शकम्,
दवाग्नि पान पंडितं विभूति वृन्द मंडितम्,
भजामि राधिकाधवं कला धुरीण माधवम् ॥

बलावलेपः —बलं शौर्य, तस्य यः **अवलेपः** दर्पः, तद्रूपा या **वारुणो** मदिरा, तया **विमूढ** नां मत्तानां, **मूढानां** अभिभूतचेतनानां, या **मंडली** समूहः, तस्याः **विडम्बना** अवमानना, अपि च **विदारः** नाशः **तत्पूर्वकं** तेन सहितं, **शिवाध्वदर्शकं** **कल्याण** मार्ग द्रष्टारं, **दवाग्नि-पान पंडितं** **दवाग्निः** दावानलः, तस्य पाने **पंडित** दक्षं, **विभूति वृन्द मंडितं** **विभूतिः** ऐश्वर्य, तस्याः **वृन्दं** बाहुल्यं तया **मंडितं** विभूषितं, **कलाधुरीण माधवं** **कलाधुरीणं** कला मर्मज्ञं, **राधिकाधवं** राधापतिं कृष्णं **भजे** सेवे ।

हे कृष्ण ! आप बलरूपी मदिरा से मतवाले मूढ लोगों को केवल नीचा ही नहीं दिखाते बल्कि उनका नाश करने वाले भी हो । आप दावानल (जंगल की आग को पी जाने (शान्त करने) में निपुण हो, ऋद्धि सिद्धियों से भरपूर हो, कलामर्मज्ञों में प्रमुख हो, राधामाधव आपके चरणों में श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूँ ।

४

सरीसरीति साध्वसं स्वभक्ति युक्त चेतसाम्,
विदादधीति कौतुकं सुरूप रूपिणाम् ॥
भरोभरीति निर्धनाशरण्य मानवोदरम्,
प्रणोनवीमि राधिकायुतं तमत्र सादरम् ॥

यः कृष्णः **स्वभक्ति युक्त चेतसां** निजभक्ति-रत-चित्तानां, साध्वसम् भयं, **सरसरीति** मुहु मुंहुः (दूरी करोति) **सुरूप रूप रूपिणाम्** मनोहर रूपवतां अपि **कौतुकं** आश्चर्यं **विदादधीति** भूयशो जनयति, **निर्धनाशरण्य मानवोदरं निर्धनानां** अर्थाभावग्रस्तानां, **अशरण्यानां** आश्रयविहीनानां, **मानवानां** नराणां, **उदरं भरीभरीति** सदा तान् पालयति राधिकायुक्तं तं कृष्णं अत्र इह, प्रणोनवीमि, बारं बारं नमस्करोमि ।

जो कृष्ण अपने भक्तों के मन से भय को उखाड़ने वाले हैं, सुन्दररूप वालों को भी अपने अति सुन्दर रूप से चकित करने वाले हैं, निर्धन एवं असहाय लोगों के पालक हैं, ऐसे राधामाधव भगवान् कृष्ण को मेरा बार २ नमस्कार हो ।

५

निकुंज नर्म नन्दथु प्रगाढ़ श्लेष वेपथु
प्रवृद्ध मोद मन्थरा यमारमन्ति गोपिकाः
सुधा सुधाम वेणु वादनोत्सुका श्चि चिरं व्रेज,
लसन्ति याः समन्ततो नतोस्मि गोपिकाप्रियम्

निकुंज नर्म नन्दथु निकुंजों लतागृहे यत **नर्म** प्रणयलीला, तस्मिन् यः **नन्दथुः** आनन्दः, प्रगाढः श्लेष वेपथुः तेन आनन्देन जनितः यः **प्रगाढ**, प्रभूतः, **श्लेषः** आलिंगनं, तत्परिणामः यः **वेपथुः** प्रकम्पः, तेन प्रवृद्धः अतितरां वृद्धि गतः, यः **मोदः** आल्हादः, तेन **मन्थराः** सालसाः, गोपिकाः गोपबः ललना, **यं कृष्ण आरमन्ति** तेन सह क्रीडारस मास्वादयन्ति। सुधासुधाम वेणु **सुधा** अमृतं तस्य **सुधाम** गृह या वेणुः वंशी, तस्य वादने **उत्सुकाः** उत्कंठिताः, या गोपिकाः, **व्रजे** व्रजभूमौ, यं कृष्णं **समन्ततः** अभितः, **लसन्ति** शोभन्ते तं कृष्णं गोपिका प्रियं गोपी वल्लमं नतोस्मि कृतप्रणामोस्मि।

ब्रज के लता कुंजों में प्रणय लीला के समय आलिंगन द्वारा उत्पन्न आनन्द में विभोर गोपियां जिस कृष्ण के साथ रमण करती हैं, जो गोपियां कृष्ण की अमृतमयी यांसुरी के मधुर स्वर को सुनने के लिए हर क्षण लालायित रहती हैं, और कृष्ण के ही आस पास मंडराती रहती हैं, उसी गोपी वल्लम कृष्ण को मेरा सादर अभिवादन हो।

स्वभक्त प्रीति कर्षितस्तदीय गीति हर्षितः
विहाय सौध सन्निधिं सुयोधनानुरोधिनीं
प्रयाति वैदुरं सुशाक मत्तु मातुरो विभुः
बिभर्तु मानसीं मुदं स नो मुदा जनार्दनः ॥

स्वभक्त प्रीति कर्षितः **स्वभक्तानां** निजसेवकानां, **प्रीत्या** प्रेम्णा, **कर्षितः** आकृष्टः, तदीय गीति हर्षितः तदीयानातां तेषां भक्तानां **गीत्या** स्तवगानेन, **हर्षितः** प्रसन्नः, **विभुः** विभूतिसम्पन्नः कृष्णः, सुयोधनानुरोधिनीं **सुयोधनः** दुर्योधनः, तन्नाम्नापि सम्बोधितः तेन **अनुरोधिनीं** आग्रहपूर्विकां, **सौधसन्निधिं** निज प्रासादगनं, **विहाय** त्यक्तवा, वैदुरं विदुरगृहे पक्वं **सुशाकं** स्वादुयुक्तं शाकं **अत्तु** भोक्तु, **आतुरः** व्याकुल इव **प्रयाति** गच्छति, **स** कृष्णः **मुदा** प्रसादेन, **नः** अस्माकं, **मानसीं** मनोगतां, अनी **मुदं** आनन्दं, **बिभर्तु** ददातु, अस्माकमपि मनांसि आनन्देन पूरयतु ।

जो कृष्ण अपने प्रेमी भक्तों के पास खिचे हुए चले जाते हैं, जो कृष्ण अपने भक्तों द्वारा की जाने वाली स्तुति पर रीझ जाते हैं, और जिस कृष्ण ने अपने राजमहल में ले जाकर खाना खाने का दुर्योधन के बार बार किए आग्रह को ठुकरा कर सखा सुदामा के घर में पके हुए स्वादु साग को बड़े चाव के साथ खाया था, वही जनार्दन कृष्ण हम पर प्रसन्न होकर हमें मानसिक आनन्द प्रदान करें ।

७

ममत्व मोह मारणी समत्व योग धारिणी,
विषाद शोक शारणी विवृद्ध दंभ दारणी ॥
मुखारविन्द निस्सृता प्रयोग योग सुधृता,
निष्काम कर्म दर्शिका गीतेति ज्ञानवर्धिका ॥

ममत्व मोह मारणी **ममत्वं** स्त्री पुत्रादिषु अनुरक्तिः तेन जनितः यः **मोहः** आसक्तिः, तयोः **मारणी** हन्त्री, **समत्व योग धारिणी** **समत्वं** आत्म-साम्यं, तदेव यः **योगः** साम्य दर्शन प्रयासः, तस्य **सारिणी** प्रवर्त्तिका, **विषाद शोक शारणी** **विषादः** विपरीतपरिणाम जन्यं दुःखं **शोकः** प्रियजनबस्तु वियोग तेन जनितं दुःखं, तयोः विषाद शोकयोः शारणी नाशिका, **विवृद्ध दभ दारणी** विवृद्धः अतितरां वृद्धिं गतः यः **दभः** कपटं, तस्य **दारणी** अपहारिणी, **मुखारविन्द निस्सृता** साक्षात् कृष्ण मुख कमलोद्भवा, **प्रयोग योग सुधृता** **प्रयोगः** आचरणं, स एव योगः तेन **सुधृता** सम्यगनुशीलिता, **निष्कामकर्म दर्शिका** **निष्कामं** फलेच्छारहितं यत् कर्म तस्य **दर्शिका** उपदेशिका, एवं च **ज्ञान वर्धिका** आत्म तत्व ज्ञानोत्पादिका, गीतेति गीता नाम्ना प्रख्यातो ग्रंथो विद्यते ।

जो गीता ममता और मोह को मिटाने वाली है, जो प्राणीमात्र में विद्यमान परमात्मा एवं आत्मा की सत्ता का उपदेश करती है, जो प्रतिकूल परिणाम से उत्पन्न दुःख और प्रिय वस्तु तथा आत्मजन के वियोग से पैदा हुए शोक को मिटाती है, जो संसार में बढ़े हुए छल कपट का नाश करती है, जो गीता स्वयं भगवान् कृष्ण के मुखकमल से निकली है, जिस गीता के उपदेशों पर आचरण करने से कल्याण की प्राप्ति होती है, जो फलेच्छारहित कर्म करने का उपदेश देती है और जो मंगलमय ज्ञान को बढ़ाती है, ऐसी है उस कृष्ण की गीता जो जीवन में अपनाने योग्य है ।

८

सशंख चक्र कुंडलः किरीट शोभि शेखरः,
गृहीत पीत वस्त्रकः सरोरुहाभ नेत्रकः ॥
सुधा निधान वेणुवत्करश्च कुंकुमाधरो,
ददातु देव नन्दनो मुदं नितान्तमाशु नः ।

सशंख चक्र कुडंलः शंख चक्र कुंडलधरः, **किरीट शोभि शेखरः** किरीटं मुकुटं, तेन शोभि शोभमानं **शेखरं** शिरः यस्य सः, **गृहीत पीतवस्त्रकः गृहीतं** धारितं, **पीतं** पीतवर्णं **वस्त्रं** अम्बरं, यन एवं भूतः स पीताम्बरधरः कृष्णः, **सरोरुहाभनेत्रकः सरोरुहं** सरसि उत्पन्नं कमलं तद्वत् **आभा** शोभा यस्य **नेत्रयोः** नयनयोः, तादृशः कमलनयनः कृष्णः, **सुधानिधान वेणुवत्करः सुधा** अमृतं, तस्य **निधानं** गृहं या **वेणुः** वंशी तद्वन्तो **करौ** हस्तौ यस्यस, कृष्णः कुंकुमाधरः **कुंकुमं** केशरः तद्वद्वर्णौ **अधरौ** ओष्ठौ, यस्य एत्वभूतः कृष्णः, **देवनन्दनः** सुरेभ्य आनन्ददाता कृष्णः **नः** अस्मभ्यं अपि **आशु** शीघ्रं, **नितान्तं** निरन्तरं स्थायिनीं, **मुदं** आनन्दं, **ददातु** प्रयच्छतु ।

जो कृष्ण शंख चक्र रूपी कंडलों को धारण करने वाले हैं, जिन के सिर पर मुकुट शोभायमान है, जो पीताम्बरधारी हैं, जिन के नेत्र कमल के समान सुन्दर हैं, जिनके हाथों में अमृत जैसी मधुर स्वरों वाली बांसुरी रहती है, और केसररंग के जिन के ओंठ हैं वेही देवनन्दन कृष्ण हमें भी शीघ्र ही स्थायी आनन्द प्रदान करें ।

असंख्य सैन्य संकुले बलिष्ठ वीर्य सन्तुले,
द्विपेन्द्र मंद्र गर्जने त्वमन्द्र दुन्दुभि स्वने ।।
रथींद्र वृद्ध द्वेष दाव कौरवाजिरे हरिम्,
विराजमानमद्भुतं नमामि पार्थ सारथिम् ।।

असंख्य सैन्य संकुले अगण्य सेना युक्ते; **बलिष्ठवीर्य सन्तुले बलिष्ठानां** महाबलिनां वीर्यस्य शौर्यस्य सन्तुले परीक्षा स्थले, **द्विपेन्द्र मन्द्र गर्जने** द्विपेन्द्राणां गजराजानां यते **मन्द्रं** गंभीरं, गर्जनं यत्र तद्युक्ते, **अमन्द दुन्दुभि स्वने अमन्दः** बहुलः दुन्दुभीनां भेरीणां **स्वनः** शब्दः यत्र एतादृशे, **रथीन्द्र रथीन्द्राणां** महारथिनां, वृद्धः प्रबलः यः **द्वेषः** शत्रुता, स एव **दावा** दावानलः यस्य तद्वति **कौरवाजिरे** कुरुरणांगणे, **विराजमानं** शोभमानं, अद्भुतं आश्चर्यजनकं चरित्रं, **पार्थ सारथिं** अर्जुनरथ संचालकं कृष्णं **नमामि प्रणतोस्मि** ।

जिस युद्धभूमि कुरुक्षेत्र में अनगिनत सेना इकट्ठी हुई है, जो रणभूमि महाबलियों केबल की परीक्षा का स्थल है, जहां योद्धाओं में बढ़े हुए द्वेष की आग धधक रही है, जहाँ बड़े बड़े हाथी चिघाड़ रहे हैं, जहां लगातार कोलाहल से कान बहरे हुए जा रहे हैं, ऐसे कुरु पांडव युद्धभूमि में अर्जुन के रथ को हांकने वाले अद्भुत शक्ति सम्पन्न कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूं ।

भजंतु केऽपि योगिराज - भावना - प्रभाविता
स्तथाऽऽमनंतु केऽपि वेदपूरुषं पुराण मव्ययम् ॥
भणंतु मानवं महाचरित्र मत्र संसृतौ ;
नवोद्धृताहरं विहारिणं वयं भजामहे .

केऽपि केचन भक्ताः तं कृष्णं **योगिराज भावना प्रभाविताः** कृष्णः योगिराज इति **भावनया** विचारेण प्रभाविताः तादृशं तं कृष्णं मन्यमानाः **भजन्तु** तस्य भक्तिरता भवन्तु, **तथा** तेनैव प्रकारेण, केऽपि भक्ताः तं कृष्णं **वेदपुरुषं** यज्ञपुरुषं, **पुराणं** शाश्वतं, **अव्ययं** अविनाशिनं मत्वा **आमनन्तु** तस्य मननं कुर्वन्तु, तथैव केऽपि भक्ताः तं कृष्णं अत्र इह, **संसृतौ** संसारे **महाचरित्रं** महाशक्तिवन्तं, **मानवं** साकाररूपधारिणं, **भणन्तु** कथयन्तु, परं वयं तु तं कृष्णं **विहारिणं** गोपिकाभिः क्रीडारतं, **नवोद्धृताहरं नवोद्धृतं** नवनीतं, तस्य आहरं सम्यग् हर्तारं मन्यमाना एव **भजामहे** सेवाम है ।

भले ही कोई कृष्ण भक्त उसे योगिराज मानते हुए उसकी भक्ति में लीन रहें, भले ही कोई भक्त उसे यज्ञपुरुष, शाश्वत, और अविनाशी मान कर उसका मनन करें भले ही कोई भक्त उसे इस संसार में महाबली महा-मानव मानते रहें, परन्तु हम तो गोपियों में रास रचाने वाले और ताजा माखन चुराने वाला ही मान कर उसकी भक्ति करेंगे ।

अघौघ - व्याघ्र - घातिनं स्वशत्रु - शौर्य - शातिनं
समस्त विश्व व्यापिनं यथेच्छ मब्धि शायिनंम्
दुर्धर्ष राक्षसौघ - शक्ति नाश स्वीकृत प्रणं,
स्तुम स्तमद्रिधारकं नुमो नराधिपं मुदा ॥

अघौघ व्याघ्र घातिनं अघानां पापानां यः **ओघः** समूहः, स एव **व्याघ्रः** हिंस्रौ जन्तुः, तस्य **घातिनं** हन्तारं, **स्वशत्रु शौर्य शातिनं** स्वीया ये शत्रवः अरयः तेषां यत् **शौर्यं**, पराक्रमः तस्य **शातिनं** नाशकं, **समस्त विश्व व्यापिनं** समस्तं अखिलं यत **विश्वं** संसारः, तस्मिन् **व्यापिनं** विद्यमानं **यथेच्छमब्धि शायिनं यथेच्छं** स्वेच्छया, **अब्धौ** समुद्रे **शायिनं** शयन कर्त्तारं, **दुर्धर्षराक्षसौघ दुर्धर्षाः** दुर्जयाः ये **राक्षसाः** असुराः तेषां यः **ओघः** समूहः, तस्य **शक्तिं** शौर्यं तस्य **नाशे** दलने स्वीकृतः अंगीकृतः **प्रणः** प्रतिज्ञा येन एवंभूतं कृष्णं **स्तुमः** स्तवगानं कुर्मः **अथ च** तं **नराधिपं** नरेशं मत्वा मुदा आनन्देन **नुमः** नमस्कारं कुर्मः ।

जो कृष्ण पाप समूह रूपी व्याघ्र के नाश करने वाले हैं, जो अपने शत्रुओं के बल को हरने वाले हैं, जो सर्वव्यापी हैं, जो अपनी इच्छा से समुद्र में शयन करते हैं, जो महाबली राक्षसों का हनन करने की प्रतिज्ञा किए हुए हैं, ऐसे ही गोवर्धन पर्वत को हाथ पर उठाने वाले नराधीश कृष्ण को हम प्रसन्न होकर नमस्कार करते हैं और उनकी स्तुति करते हैं ।

तितांसवो यशः स्वकं स्वयुक्ति गर्वि नास्तिकाः
निनीषवो नतिं परां तथा च न्यायनायकाः .
जिगीषवः शिवं निजोपदेश तत्व दर्पिणः
वयं तु कृष्णनाम कौसुमासवं पिपासवः

स्वयुक्ति गर्वि नास्तिः स्वयुक्तयः निजतर्काः ताभ्य उत्पन्नो यः **गर्वः** दर्पः तद्वन्तः ये **नास्तिकाः** वेदेशवरनिन्दकाः, **स्वकं** निजं, यशः कीर्ति, **तितांसवः** विस्तारयुतिमिच्छन्ति, तथा च एवं **न्यायनायकाः** न्यायशास्त्र धुरीणाः, **परां** परेषां **नतिं** हीनतां **निनीषवः** नेतुमिच्छन्ति **निजोपदेश तत्व दर्पिणः** **निजोपदेशः** लब्ध ज्ञानबलेन परेभ्यो ज्ञानदानं, तस्य यत् **तत्वं** रहस्यं तेन **दर्पिणः** अभिमत्ताः केऽपि पंडिताः **शिवं** कल्याणं **जिगीषवः** जेतुमिच्छन्ति, परोपदेश-द्वारेका केचन पंडिताः कल्याणमर्जयितुमिच्छन्ति, इति भावः, भवन्तु ते तथा, वयंतु **कृष्णनाम कौसुमासवं श्रीकृष्णनाम रूपी** यः पुष्परसः तं **पिपासवः** पेतुमिच्छामः स्मः ।

अपनी अकाट्य दलीलों पर इठलाने वाले नास्तिक (वेद और ईश्वर की सत्ता को न मानने वाले लोग) भले ही अपना यश फैलाना चाहते हों, न्यायशास्त्री भले ही अपने गूढ़ ज्ञान के बल पर दूसरों को उपदेश देकर अपना कल्याण और उस पर ही विजय मानते हों परन्तु हम तो केवल कृष्ण-नाम रूपी पुष्परस को पीने के इच्छुक हैं, इसके सिवा और कुछ नहीं चाहते ।

दुरीह - दंदशूक -जात - मृत्युमी-
स्वमोक्ष कांक्षया महामुनेः शुकाद्धितेच्छया
मलापहा मनोरमा पवित्र कार्ष्णि संकथाः
श्रुताः परीक्षितेन या भवंतु नस्तथा शिवाः

दुरीहानां दुश्चेष्टानां, **दंदशूकानां** वृश्चिकानां, सर्पाणां वा दर्शनेन प्रजाता सुतरां जाता या **मृत्युमीः** मरणभयं उत्पन्ना या मोक्षकांक्षा तया निजमुक्ति लाभेच्छया **परीक्षितेन** तन्नाम्ना राज्ञा **हितेच्छया** कल्याणकामनया **शुकात** शुक नाम्नो मुनेः मुखात् **मलापहाः** पापहराः **मनोरमाः** मनोहराः **पवित्राः** पावनाः **कार्ष्ण्यः** कृष्णस्य याः संकथाः **गाथाः** श्रुताः यथा ताय **शिवा** कल्याणकर्य्यः जाताः तथा तेनैव प्रकारेण ताः कृष्णकथाः नः अस्यमपि कल्थाणदायिन्यो भवन्तु सन्ति ।

मुनि के शाप के कारण दुष्ट सांप के काटने से उत्पन्न मृत्यु भय से मुक्ति की इच्छा रखने वाले महाराजा परीक्षित ने पापहारी मधुर और पवित्र कृष्ण की कथाओं का श्रवण किया, और वे जैसे राजा परीक्षित के लिए कल्याणकारी सिद्ध हुई वैसे ही वे कृष्ण कथायें हमें भी शान्ति प्रदान करने वाली सिद्ध हों ।

१४

यदीप चित्र चित्रणान् मनीषि व्यास लेखनी,
सुधन्यवाद भाजनी यशस्विनाम राजनी ॥
भवन्ति विश्व मोहनीं नितांत कांत मूर्ति
माकलय्य मोहिता यया तया वितीर्यतां शिवम् ॥

यदीय चित्र चित्रणात् यस्य कृष्णस्य **चित्रस्य** मूर्तेः **चित्रणात्** वर्णीनात् **मनीषी** महामनस्वी **व्यासः** तस्य लेखनी **सुधन्यवादभाजनी** सुतरांधन्यवादार्ही, **यशस्विनाम राजनी** प्रशंसनीय नाम्ना शोभिता, जाता, एवमेव ये भक्ताः तस्य कृष्णस्य **विश्वमोहिनीं** सर्वमनोहरां, **नितान्तकान्तां** सदा शोभमानाँ **मूर्ति** चित्रं **आकलय्य** तस्या श्चिन्तनं कृत्वा, **मोहिताः** मुग्धा जाताः, तयैव मूर्तया स कृष्णः, अस्मभ्यमपि **शिवं** कल्याणं, **वितीर्यताम्** दीयताम्।

जिस भगवान् श्रीकृष्ण का चरित्र लिखने से महामुनि व्यास की लेखनी धन्य हो गई और प्रशंसनीय नाम पाया, उसी व्यास के द्वारा चित्रित भगवान् कृष्ण की मूर्ति का मनन करने से जिस प्रकार कृष्ण भक्त मुग्ध हो जाते हैं, वही कृष्ण की श्याम सलोनी मूर्ति हमें भी कल्याण प्रदान करे।

निशाट वाट कंटक प्रक्षेप क्षेम संक्षया
पनीत भीति देवता प्रसादेसद्म स्वामिनम् ॥
छलावतार पूतना तनू निपात शातदम्,
सनातनं रमापतिं नतोऽस्मि देवकी सुतम् ॥

निशाटा रात्रिचरा: राक्षसा: तेषां य: **वाट:** मार्ग:, तस्मिन ये **कंटका:** तेषां **प्रक्षेपेण** य: **क्षेमस्य** कल्याणस्य **संक्षय:** नाश, तेन अपनीता दूरीकृता **देवतानाँ** या भीति भयं तेन जनित: य: **प्रसाद:** प्रसन्नता. तस्य **सदम्** गृहं स्वामिनं कृष्णं **छलावतार** कपटरूपा या **पूतना** तन्नाम्ना ख्याता राक्षसी, तस्या: **तन्वा:** शरीरस्य, **निपातेन** हननेन **शातदं** सुखप्रदं **सनातनं** शाश्वतं **रमापति** लक्ष्मीपतिं **देवकी सुतं** वासुदेवं कृष्णं **नतोऽस्मि** प्रणमामि ।

जो कृष्ण राक्षसों द्वारा मार्ग में बिछाये गये कांटों से भयभीत देवताओं के भय को दूर करने से प्राप्त आनन्द के छा घर हैं, जो कृष्ण राक्षसी पूतना को मार कर भक्तों को सुख प्रदान करते हैं, ऐसे अपने राधामाधव देवकी नन्दन कृष्ण को मैं नमस्कार करता हूं ।

१६

अवद्य चैद्य द्विन्द्विनं सहाय हीन नंदिनं,
महांस कंस ध्वंसकं विरोधि दर्प दंशकम् ॥
कलिंदजा विलीन व्याल कालियावमर्दकम्,
भजामहे महामहो विराजितं स्वयंभुवम् ॥

अवद्य चैद्य द्विन्द्विनं अवद्यः निन्दाभाजनं यः चैद्यः चिदिपवंश जातः चैदिराजः शिशुपालः, तस्य द्विन्द्विनं तस्य शत्रु सहायहीन नन्दिनं ये भक्ताः सहायहीनाः साहाय्य रहिताः तेषां नन्दिनं साहाय्य प्रदानेन सुखदायकं महांस कंस ध्वंसकं महांसः महास्कन्धः (महाबली) यः कंसः तस्य ध्वंसकं नाशकं विरोधिदर्प दशंकम् विरोधिनः शत्रव; तेषां यः दर्पः अभिमानः, तस्य दंशकं हर्तारं कदिलन्दजा विलीन कलिन्दजा यमुना तस्यां विलीनः यःव्यालः महाभयंकरः कालियः कालियामः नागः तस्य अवमर्दकं मानमर्दनपूर्वकहन्तारं, महामहोविराजितं महति बृहति महसि सप्तलोकेषु एकस्मिन लोके विराजितं शोभितं स्वयंभुवं स्वच्छया शरीरधारिणं कृष्णं भजामहे सेवामहे।

जो श्री कृष्ण महापापी चेदिराज शिशुपाल का महाशत्रु बनकर उसे मारने वाला है, निराश्रितों को आश्रय देने वाला है, महाशक्तिशाली कंस का संहार करने वाला है, शत्रुओं के गर्व को चूर करने वाला है, यमुना में रहने वाले भयंकर महानाग कालिय को मारने वाला है, ऐसे सात लोकों में विराजमान सर्वव्यापी कृष्ण की हम भक्ति करते हैं।

प्रभुं सुदाम कामना प्रपूर्ति पारिजातकं,
सप्रेम भक्ति पूजितं विनष्ट कुब्ज कुब्जया ॥
उलूखलावमर्द प्राप्त स्वोद्धृति नलोऽथ
कूबरस्तदर्च्य पाद पद्म श्रीपतिं भजेऽनिशम ॥

सुदाम सुदामा नाम्ना ख्यात: कृष्ण सखा तस्य **कामनाया:**, इच्छाया: **प्रपूर्ति:** निष्पादनम्, तस्या: **पारिजातकं** कल्पवृक्षं, **विनष्ट कुब्ज कुब्जया विनष्ट:** अपनीत:, **कुब्ज:** शरीरनमन रूपा विकृति: यस्या: तया **कुब्जया** तन्नाम्ना ज्ञातया कृष्णदास्या, **सप्रेम भक्ति पूजितं प्रेम्णा** श्रद्धया, **भक्त्या** च पूजितं अर्चितं, कृष्णं, **उलूखलावमर्द प्राप्तस्वोद्धृति:** उलूखल: धान्याजनदंड:, तेन **य: अवमर्द:** घर्षणं तेन प्राप्ता, **स्वोद्धृति:** निजोद्धार:, येन एवंभूत:, **नल:** अथ **च** कूबर:, शापवशात् वृक्षरूपधारिणौ, नलकूबराभिधौ कृष्ण भक्तौ, **तदर्च्य पाद पद्म श्री पतिं** तदर्च्यौ ताभ्यां पूजितौ कमलरूपौ चरणौ यस्य एवं भूतं **श्रीपतिं** कृष्णं अहं **अनिशं** दिवारात्रि, **भजे** सेवे ।

जो कृष्ण अपने भक्त एंव सखा सुदामा की इच्छा को पूरी करने में कल्पवृक्ष हैं, अपने कूबड़ को कृष्ण द्वारा नाश कर देने के कारण जो कुब्जा उसकी श्रद्धा और प्रेम से पूजा करती है, शाप से वृक्ष बने नल और कूबर नाम के दो सगे भाई कृष्ण के चरणकमलों की रात दिन पूजा करते हैं, क्यों कि कृष्ण ने उलूखल-अन्नकूटने के एक प्रकार के डंडे द्वारा उन दोनों वृक्षों को उखाड़ कर उनको शाप से छुटकारा दिलाया था, उसी कृष्ण की मैं भी दिन रात पूजा करता हूं ।

मानुस हों तो वही रसखान बसौं, व्रज गोकुल गांव के ग्वारन,
जो पशु हों तो कहा बस मेरो चरौं, नित नन्द की धेनु मंझारन,
पाहन हो तो वही गिरि को, जो धरयो कर छत्र पुरन्दर धारन,
जो खग हों तो बसेरे करौं, कालिन्दी कूल कदम्ब की डारन।

रसखान

❂❂❂

सेस महेस दिनेस सेरेस हूं, जाहि निरन्तर गावे,
जाहि अनन्त अनादि अखंड, अछेद अभेद सुवेद बतावैं,
नारद से सुक व्यास रटें, पचि हारि तऊ पार न पावे,
ताहि अहीर की छोहरियाँ, छछिया भरि छाछ पे नाच नचावे।

रसखान

❂❂❂

सुनो दिलजानी मेरे दिल की कहानी तुम,
इस्म की बिकानी बदनामी भी सहूंगी मैं।
देवपूजा ठानी मैं निवाजहु भुलानी तजे,
कलमा कुरान सारे गुनन गहूंगी मैं।
साँवला सलोना सिर कुलेदार
तेरे नेह दाग में निदाघ व्है दहूंगी मैं,
नन्द के कुमार कुर्बान ताणि सूरत पै,
ताण नाल प्यारे हिन्दुवानी व्है रहूंगी मैं।

ताज

✲ ✲ ✲

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अतिदूर।

कबीर

✲ ✲ ✲

रहिमन वे नर मर चुके, जे कहूँ माँगन जाहि,
उन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहि।

रहीम

✲ ✲ ✲

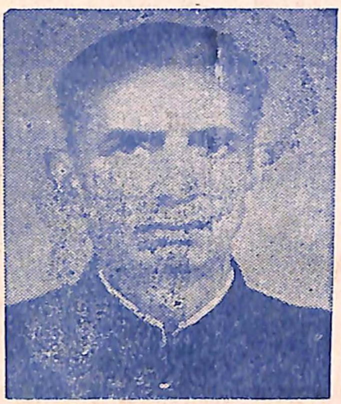

श्री नरोत्तम दत्त शास्त्री बिलासपुर प्रजा मण्डल के संस्थापकों में प्रमुख हैं। स्वतन्त्रता संघर्ष में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण इन को ताम्रपत्र से सम्मानित किया गया है और भारत सरकार एवं राज्य सरकार से पेंशन भी मिल रही है जिला बिलासपुर हिमाचल प्रदेश के गांव सुनहाणी में साधारण परिवार से सबन्धित पं० धीरो राम वैद्य के घर इनका जन्म १९१८ ई० सं १९७६ विक्रमी को हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में पंजाब विश्वविद्यालय से आप शास्त्री प्रभाकर एवं बी० ए० ऐल० ऐल० बी हैं तथा उर्दू, पंजाबी के भी अच्छे ज्ञाता हैं। लेखक होने के साथ साथ आपने कुछ समय पहले "बिलासपुर का राजनीतिक इतिहास" और "बिलासपुर प्रजा मण्डल के सात सूरमे" पुस्तकें हिन्दी में लिखी हैं। संस्कृत में वैदिक व्याकरण "निरुक्त" पर अमृतसर के आचार्य प्रातः स्मरणीय पं० मिहिरचन्द्र पुष्करणा शास्त्री अपने गुरु जी के साथ लिखा इनका भाष्य है। "श्री कृष्ण तांडव स्तोत्र" संस्कृत में इनकी दूसरी पुस्तक है।

आपको विधायक पैन्शन भी मिलती है। आठ नौ बर्ष पहले आपने पारिवारिक दायित्वों से मुक्त होकर वकालत तथा दलगत राजनिति भी छोड़ दी थी। अपने जीवन के शेष मूल्यवान समय का सदुपयोग स्वाध्याय तथा साहित्य सृजन में कर रहे हैं।

Library IIAS, Shimla
S 294.184 1 Sh 24 S
G 1303